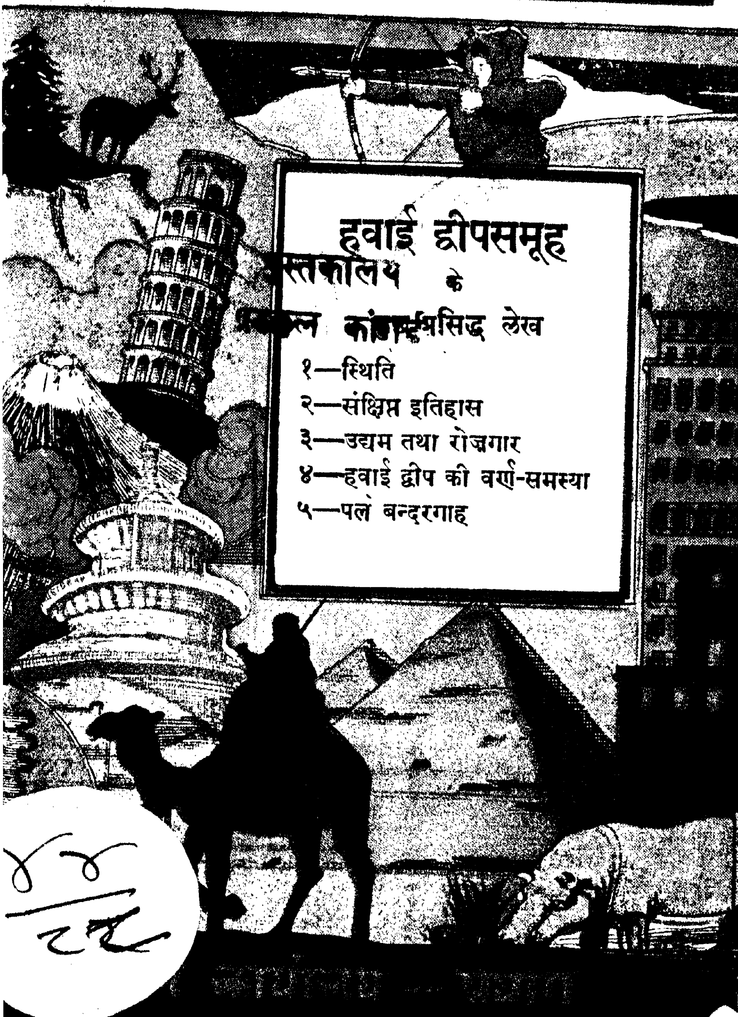
देश दर्शन

हवाई द्वीपसमूह



फरवरी १९४२] # देश-दर्शन [फाल्गुन १९९८

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ३] [संख्या ८

हवाई द्वीपसमूह

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs.	Rs. 4/-		वार्षिक मूल्य	४)
Foreign	Rs. 6/-		विदेश में	६)
This copy	As. -/6/-		इस प्रति का	।=)

विषय-सूची

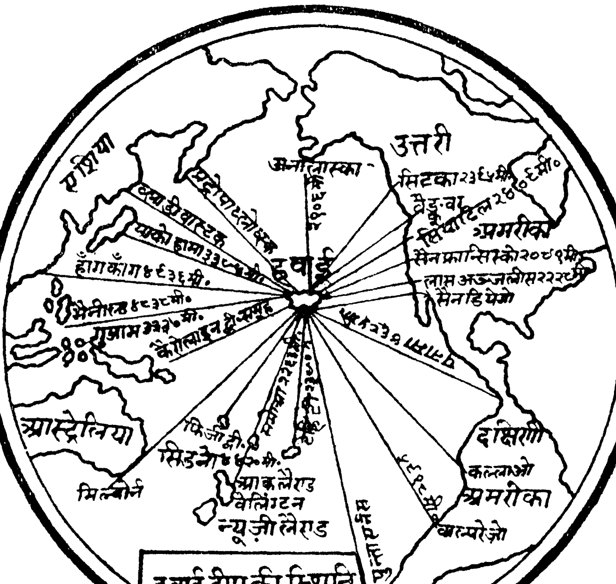
स्थिति

उत्तरी प्रशान्त महासागर में हवाई द्वीप समूह की स्थिति बड़ी विलक्षण है। यहां से निकट तम महाद्वीपीय स्थल २०० मील दूर है। आरम्भ में मनुष्य यहां कैसे आये होंगे यह देखकर आश्चर्य होता है। अनुमान किया जाता है कि यहां के मूल निवासी दक्षिणी प्रशान्त महासागर के टेहटी या समोआ द्वीपों से अब से १५०० वर्ष पहले आये थे। कुछ लोग इसे सैंडविच द्वीप समूह कहते हैं। लेकिन इसका साधारण नाम हवाई द्वीप समूह है। वास्तव में हवाई इस समूह का सबसे बड़ा द्वीप है।

प्रशान्त महासागर के मध्यवर्ती द्वीप समूहों में यह सबसे अधिक उत्तरी, सबसे अधिक ऊँचा और सबसे अधिक बड़ा द्वीप है। इसकी ऊँचाई १३८०० फुट और क्षेत्रफल ६४१२ वर्ग मील है। उत्तरी प्रशान्त महासागर में इसकी केन्द्रवर्ती स्थिति बड़े मार्के की है।

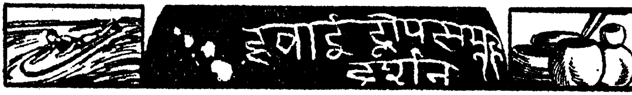
दक्षिण की ओर समोआ द्वीप यहां से २२६३ मील और टेहिटो २३६० मील दूर है। उत्तर की ओर एल्यूशियन द्वीप समूह का ऊनालास्का द्वीप २१०६ मील और पश्चिम की ओर गुआम द्वीप ३३३७ मील दूर है। यहां का प्रधान बन्दरगाह होनोलूलू सैनफ्रांसिस्को से

२०६१ मील, लास एंजलीस से २२२८ मील सियाटिल से २४०६ मील, सिटका से २३६५ मील, याकोहामा से ३३६४ मील, सिडने से ४४२० मील, पनामा से ४६८५



हवाई द्वीप की स्थिति

मील, मनिल्ला से ४८३८ मील, हांककांग से ४६३६ मील, वालपरेज़ो से ५६१८ मील और हार्न अन्तरीप से ६४८८ मील दूर है।



हवाई द्वीप समूह की लम्बाई १५७८ मील है। यह द्वीप समूह १८°५५ और २८°२५ उत्तरी अक्षांशों और १५४°४८ और १७८°२५ पश्चिमी देशान्तरों के बीच में स्थित है। तिथि-रेखा (डेटलाइन) यहां के पश्चिमी भाग से कुछ ही दूर है। कर्क रेखा तो इसके प्रायः बीच में होकर जाती है।

प्रशान्त महासागर में जहां पहले पन्द्रह सौ मील लम्बी पर्वत श्रेणी थी उसी के बचे हुये और पानी से ऊपर निकले हुये ऊँचे भाग हवाई द्वीप समूह हैं। यह प्रायः सब के सब ज्वालामुखी हैं। इसी से इन द्वीपों की ज़मीन लावा की बनी है। बहुत से ज्वालामुखी शान्त हो गये हैं। लेकिन दो ज्वालामुखी इस समय भी प्रज्वलित हैं। इनसे गरम और लाल लावा निकला करता है। सबसे बड़ा ज्वालामुखी पर्वत माना लोआ है। यह समुद्रतल से प्रायः १४००० फुट ऊँचा है। इस द्वीप समूह में कई द्वीप शामिल हैं।

वेस्टर्नी (पश्चिमी) द्वीप

यह उन बड़े द्वीपों के बचे हुये भाग हैं जो धीरे धीरे नष्ट हो गये हैं। नीहायू, नेकेर, फ्रेंच फ्राइगेट्स, गार्डिनर आदि चट्टानें लावा की बनी हुई हैं। यह चट्टानें १७० १००० फुट तक ऊँची है। प्रवाल की बनी हुई या चट्टानों की ऊँचाई १० से ४० फुट तक है। लेसन, लिसियान्स्की पर्ल, हर्मेस, मिडवे, ओसेन या क्यूरे आदि द्वीप प्रवाल या मूँगे के बने हुये हैं। इनके सिवा फ्रास्ट, ब्रुक्स, मारो, डावसेट और गैम्बिया आदि चट्टानें हैं। यह द्वीप बसे हुये नहीं हैं केवल मिडवे में तार घर है। लेसन पर वहां की खनिज पदार्थ के लिये लोग गये थे परन्तु खनिज पदार्थ समाप्त होने पर वह फिर खाली कर दिया गया है। नेकेर में पत्थर के चबूतरे तथा प्राचीन मन्दिर बने हुये हैं जिनके इतिहास का पता नहीं है। वहां की मूर्तियां होनोलूलू के कौतुकालय में रक्खी हुई हैं। नीहायू और नेकेर द्वीपों में घास तथा जड़ी बूटियों के सिवा और कुछ भी नहीं हैं वहां तटों में मछलियां और कछुये बहुत हैं। पर्ल और हर्मेस द्वीप में बाल वाली सील मछली पाई जाती हैं जो संसार में और कहीं नहीं मिलती है। इन द्वीपों में

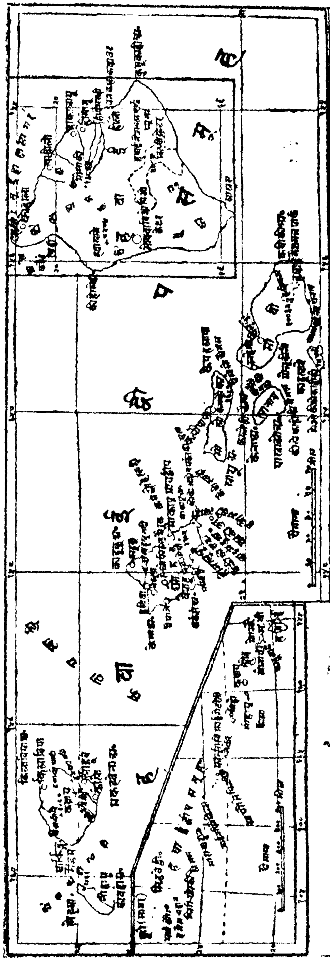
चिड़ियां बहुत पाई जाती हैं। जब एक बार जापानियों ने एक ही ऋतु में ३ लाख चिड़ियों को केवल पंख के लिये शिकार किया तो राष्ट्रीय सरकार ने हवाई में चिड़ियों की रक्षा के लिये एक समिति की स्थापना की।

एक पशु विद्या विज्ञानी ने अनुमान लगाया था कि केवल लेसन द्वीप में १ करोड़ चिड़ियां हैं। यह भांति भांति की हैं और कई एक प्रकार की चिड़ियां ऐसी भी हैं जो संसार के और किसी भाग में नहीं पाई जाती हैं। चिड़ियों की भांति रहने तथा छोटे पंख वाले कुछ छोटे पशु भी हैं जो बिलों तथा मांदों में रहते हैं और उड़ नहीं सकते हैं। बहुतेरे पक्षी जोड़े के जोड़े नाचते हैं उनका नाच बड़ा ही सुन्दर होता है।

हवाई

हवाई द्वीप त्रिभुजाकार है जिसकी भुजाएँ ९०, ७५ ६० मील हैं। इस द्वीप में ५ ज्वालामुखी पर्वत हैं। जो एक दूसरे से २० मील की दूरी पर हैं और तीन हजार से ७ हज़ार फुट ऊँची पर्वतीय दीवार द्वारा मिले हुये हैं। यह द्वीप सबसे नवीन है और अभी बन रहा है। इसके तट में २५७ मील में प्रवाल की दीवार पाई जाती है। उत्तर की ओर समुद्र अधिक गहरा है और किनारे की चट्टानों की ऊँचाई १५०० फुट है। उत्तर को ओर वैनिओ वैमानो आदि घाटियां हैं जो कई हज़ार फुट गहरी हैं। उत्तर की ओर ही हवाई का सबसे बड़ा तथा प्रसिद्ध कोहाला नामक बन्दरगाह है।

यहां को कोहाला पर्वत ५५०५ फुट ऊँचा है और सबसे अधिक प्राचीन है। दक्षिण-पूर्व की ओर मौनाकी या स्वेत पर्वत (क्योंकि इसकी चोटी पर बरफ जमी रहती है) है। इस पर्वत पर १३ हज़ार फुट की ऊँचाई पर एक छोटी झील है जो बहुधा जम जाती है। वहां पर सुन्दर पत्थर मिलते हैं जिनसे वहां के निवासी अपने अस्त्र तथा औज़ार बनाते थे। इसकी ऊँचाई १३८२५

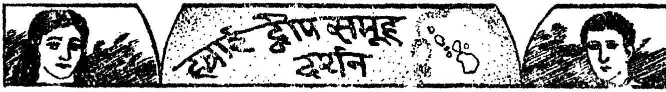


फुट है। यह संसार का सब से ऊँचा पर्वत इस अर्थ में है कि यह पर्वत समुद्र के धरातल से १६००० फुट नीचे एक बड़े मैदान से आरम्भ होता है। झील से ५० मील की दूरी पर इसकी समस्त ऊँचाई ३२ हज़ार फुट है।

हालताई पर्वत ८२६६ फुट ऊँचा है। इस पर्वत की चोटी में मौनाकी की भांति कोई बड़ा क्रेटर (मुख) नहीं है परन्तु छोटे छोटे क्रेटर कई एक हैं। मानालोआ पर्वत सब से अधिक लावा फेंकने वाला पर्वत संसार में

हैं। यह लावा का एक बड़ा गुम्बद है। यह संसार का सबसे बड़ा (घनफल में) पर्वत है। इसकी चोटी पर मोकुवा ओवेओ नामक इसका दीर्घ मुख (क्रेटर) है जो २.७ वर्गमील में है और जिसके चारों ओर ५ या ६ सौ फुट ऊँची दीवार है। इस मुख से प्राचीन काल में काली तथा भूरी लावा निकला करती थी। उन्नीसवीं सदी में इसका कई बार उद्गम हुआ था। १९११ ई० में आग्नेय पर्वत के उबाल जानने के लिये एक यंत्र लगाया गया है। हवाई की राष्ट्रीय सरकार ने किलौइआ और मौना लोग, हलीकाला और मवी आदि में पार्क बनाये हैं। किलौइआ पार्क से आग्नेय पर्वतों का मुख देखने के लिये प्रति वर्ष ६० हज़ार लोग आते हैं। इनके सिवा आग्नेय पर्वतों की लावा धूर छोटे क्रेटर, पशु, पत्ती, बन, वृक्ष और पेले (हवाई द्वीप के आग्नेय पर्वतों की देवी) आदि वस्तुएँ देखने योग्य हैं। देवी के बाल अब भी वर्तमान हैं।

मवी, मोलोकाय, लानाय, कहुलावे और मोलोकिनी द्वीप किसी समय में मिले हुये थे परन्तु अब यह ६ से १० मील चौड़ी तथा २५० से ६०० फुट गहरी खाड़ियों द्वारा



अलग हो गये हैं। यह हवाई द्वीप से २१ मील चौड़ी तथा ६१६२ फुट गहरी खाड़ी द्वारा अलग हैं। ओहू द्वीप से भी यह द्वीप २३ मील चौड़ी तथा २२४४ फुट गहरी खाड़ी द्वारा अलग हैं।

मावी

द्वीप में दो पूर्वी और पश्चिमी पर्वत हैं। पर्वतों में प्रपात भी बहुत हैं जिनका पानी सिंचाई के काम आता है। मावी द्वीप की सब से ऊँची चोटी (सूर्य का घर) १००६३ फुट ऊँची है। इस द्वीप की वैलूब घाटी परम सुन्दर है।

मोलोकाय

इसमें भी मौनालोआ और कामाको प्रधान पर्वत हैं। इस द्वीप की लम्बाई ४० मील और चौड़ाई ७ मील है। इस द्वीप में कई एक सुन्दर घाटियाँ हैं।

लानाय और कहूलावे

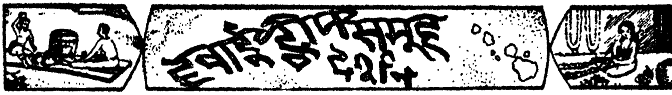
इन द्वीपों में एक ही पर्वत है। मोलोकिनी का द्वीप आग्नेय पर्वतों द्वारा नष्ट किया हुआ है।

ओहू

इसमें कूलायू और बैने पर्वत हैं। पहले ये बड़े आग्नेय पर्वत थे। पहले होनोलूलू के समीप तटीय प्रदेश में जागृत ज्वालामुखी पर्वत थे। यहाँ प्रवाल की दीवारों के भी निशान वर्तमान हैं। कृषि के ध्यान से यह द्वीप प्रसिद्ध है। इस द्वीप में बन्दरगाह हैं। पर्ल हार्बर एक बड़ा भीतरी बन्दरगाह है। होनोलूलू के पीछे की ओर एक सुन्दर घाटी है।

कवाय

यह द्वीप कवाय की खाड़ी द्वारा ओहू द्वीप से अलग है। इस खाड़ी की चौड़ाई ६२ मील और गहराई ११२३२ फुट है। यह द्वीप लगभग २५ मील व्यास का गोलाकार है। इस द्वीप में बैलीले नामक पर्वत है। यह एक प्राचीन द्वीप है। इसमें बहुत सी नदियाँ तथा प्रपात हैं। इस द्वीप में वैमी और हनाली नामक सुन्दर घाटियां हैं। नापाली तट बड़ा पहाड़ी तथा बनैला है परन्तु सुन्दरता में अद्वितीय है।



नीहायु

यह द्वीप कवाय से १५ मील चौड़ी खाड़ी द्वारा अलग है। खाड़ी की गहराई ३३०० फुट है। इस द्वीप की लम्बाई १७ मील और चौड़ाई ६ मील है। मध्य-वर्ती भाग पहाड़ी है। तट की ओर ऊँची चट्टानें हैं। निचले प्रदेश प्रवाल के बने हुए हैं। लेहूआ और कौला द्वीप निर्जन हैं।

जलवायु

हवाई द्वीप समूह में शीतल समुद्री धाराओं से उत्तरी पूर्वी व्यापारिक (ट्रेड विंडस) हवाएँ चलती हैं जिसके कारण जलवायु शीतल हो जाती है। धूप खूब रहती है परन्तु उष्ण कटिबंध के तूफान नहीं चलते हैं। मौना-लोआ में सामुद्रिक और स्थली हवायें चलती हैं। कभी कभी और प्रधानतः जाड़े के दिनों में दक्षिणी मानसून से भीषण वर्षा हो जाती है। जो ढाल हवाओं के सामने पड़ते हैं वह दूसरे ढालों की अपेक्षा अधिक शीतल रहते हैं। यहां मुख्यतः वर्षा तथा शुष्क ऋतु नहीं होती है फिर भी प्रत्येक स्थान की जलवायु बदलती रहती है। कवाय की चोटी पर संसार में औसत से सबसे अधिक वर्षा होती है। एक बार २४ घंटे में ३२ इञ्च वर्षा हुई थी। एक वर्ष ओहू में एक स्थान पर साल में २८ इंच वर्षा हुई थी और उसी से ४ मील की दूरी पर १५५ इञ्च वर्षा हुई थी। मौनाकी मौना-लोआ और हलीकाला में साधारण तौर पर बरफ पड़ा करती है।

वनस्पति

हवाई द्वीपसमूह में कई एक द्वीप शामिल हैं। इन सभी द्वीपों की जलवायु, वर्षा, और तापक्रम में बहुत बड़ा अंतर है फिर भी इन द्वीपों में वनस्पति बहुत पाई जाती है। इन द्वीपों में ६०० भिन्न प्रकार के पुष्प तथा ३०० प्रकार के वृक्ष पाये जाते हैं। लगभग १४० भांति की झाड़ियां पाई जाती हैं। अधिकांश पौधे उष्ण प्रदेश के पाये जाते हैं और पतझड़ नहीं होता है। नारियल और अंगूर के पौधे कम हैं। वनस्पति के ध्यान से हवाई द्वीप को ६ भागों में विभाजित किया जा सकता है। ११ हज़ार फुट की उँचाई के ऊपर वनस्पति नहीं पाई जाती है। केला, नारियल आदि के वृक्ष प्राचीन हवाई जातियों ने लगाये थे। नाशपाती के वृक्ष पर्वतों पर मिलते हैं। सेब, आम, नारङ्गी, क़हवा, अंगूर, अंजीर लीची, अमरूद, इमली, सुपाड़ी आदि के वृक्षों का संचार योरुपीय लोगों ने किया।



हवाई द्वीपसमूह में भांति भांति के पक्षी पाये जाते हैं। ६० प्रकार के तो केवल गाने वाले पक्षी पाये जाते हैं। मछलियां भी लगभग ५०० भांति की मिलती हैं। बड़े जंगली जानवर प्रायः एक भी नहीं पाये जाते। कुत्ते और सुअर अधिक हैं। इसके सिवा और दूसरे साधारण पशु पाये जाते हैं।



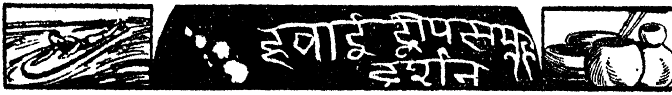
संक्षिप्त इतिहास

पोलीनीशिया द्वीप सबसे बाद में बसा था। वहां के निवासी आर्य जाति के माने जाते हैं। वह मलय प्रायद्वीप और जावा आदि द्वीपों से होकर एशिया से आ बसे थे। हवाई द्वीप समूहों के पता लगने के पहले वहां आर्य जाति के लोग बसे थे। उस समय वहां देवी देवताओं और प्रकृति की शक्तियों की उपासना होती थी। काने, कानालोआ, कू और लोनों वहां के निवासियों के मुख्य देवता माने जाते थे। गाने बजाने, क़िस्से कहानियों के कहने और कविता करने का चाव लोगों को अधिक था। उस काल के निवासी धनुष बाण आदि अस्त्र धारण करते थे और देवी देवताओं को मानव बलिदान किया जाता था। उच्च श्रेणी के सरदार साधारण लोगों की अपेक्षा अधिक बलवान और बड़े शरीर वाले होते थे। सरदारों के शरीर का भार प्रायः ४ मन से ७ मन तक होता था। इसी कारण उच्च श्रेणी वाले पदाधिकारी लोग नीचे श्रेणी वालों के साथ दुर्व्यवहार भी करते थे। सरदार लोग कई स्त्रियाँ रखते थे।

आधुनिक इतिहास से पता चलता है कि ऐतिहासिक काल में सर्व प्रथम १५५५ ई० में स्पेन निवासी ज्वान-

गेटानो ने हवाई द्वीप समूह का पता लगाया। उसके बाद कैप्टन जेम्स कुक नामक अंग्रेज़ मल्लाह ने पता लगाया। १८ जनवरी १७७८ को कुक बैमी (लवाय) नामक स्थान पर उतरा था। वहाँ के निवासियों ने कुक को लोनो देवता समझा था। दूसरे वर्ष जब कुक वहां फिर लौट कर गया तो वहाँ के निवासियों ने १४ फरवरी सन् १७७६ ई० में उसे कवालोश्र (हवाई) नामक स्थान पर मार डाला था।

१७८२ ई० में हवाई द्वीप समूह की गद्दी पर कमेहा-मेहा प्रथम बैठा। यह हवाई के इतिहास में एक विख्यात राजा हुआ है। उसने अपनी शक्ति को खूब बढ़ाया और १७६५ ई० तक में कवाय तथा नीहायु के द्वीपों पर अधिकार जमा लिया। १८१० ई० में नीहायु द्वीप भी उसके अधिकार में चला आया। उसने अपने राज्य का संगठन किया और राज्य में सुधार किये। उसका राज्य प्रबन्ध बड़ा सुखमय था। उसी काल में चन्दन के व्यापार की उन्नति हुई। सन् १८१६ में कोट्ज़ेबुये आदि के लोग हवाई में गये। विदेशी लोगों ने हवाई में जाकर



नई वनस्पति का संचार किया। विदेशी लोगों ने अस्त्र-शस्त्र और शराब आदि के कारखाने खोले।

कमेहामेहा ने विदेशियों के साथ बड़ा अच्छा व्यवहार किया। केवल उसने उनके भाषण का बहिष्कार किया था। कुछ समय के पश्चात् उसने मदिरा पान करना छोड़ दिया और मदिरा बनाने वाले समस्त कारखानों को नष्ट कर देने की आज्ञा दे दिया। उसने हवाई में प्रचलित धर्म का अनुसरण किया और लोगों को उसी मत को मानने के लिये कहा। ८ मई १८१९ ई० को कमेहामेहा की मृत्यु हो गई और उसकी रानी काहुमानू और केओपुओलानों में राजसिंहासन के लिये झगड़ा छिड़ गया। इस झगड़े से नवीन सामाजिक शक्तियों की उत्पत्ति हुई।

३१ मार्च १८२० ई० को न्यू इङ्गलैण्ड से धर्म प्रचारक लोग आये। उसके बाद ३५ वर्ष के भीतर १४ और दूसरी कम्पनियाँ हवाई में आईं। उन लोगों ने हवाई में चर्चों, पाठशालाओं और छापेखानों की नींव डाली। हवाई निवासी नई बातों के सीखने के लिये बड़े इच्छुक थे। ईसाई धर्म प्रचारकों ने हवाई की विद्या

ग्रहण किया और अपनी बाइबिल का अनुवाद हवाई भाषा में किया जिससे वहाँ के निवासी उसे पढ़ सकें। न्यूटेस्टामेंट (बाइबिल) का काम १८३२ ई० में समाप्त हुआ। हवाई में सबसे पहला शब्दकोष १८६५ ई० में तयार हुआ। विलियम एलिस नामक अंग्रेज धर्म प्रचारक ने हवाई में बड़ा काम किया था।

ईसाई धर्म का प्रचार हवाई में बड़े जोरों के साथ आरम्भ हुआ और सबसे पहले केओपुओलानी रानी ने ईसाई धर्म की दीक्षा स्वीकार की। उसके बाद दूसरी रानी ने भी ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया। हवाई की स्त्रियों ने ईसाई धर्म का बड़ा काम किया उन्हीं की सहायता के कारण ईसाई धर्म की नींव हवाई में जम गई।

कमेहामेहा प्रथम ने देखा कि उसका पुत्र लिलोलीहो निर्बल था इसलिये उसने कहूमानू को प्रधान मन्त्री बना दिया था। प्रधान मन्त्री के अधिकार राजा के समान ही थे। १८२४ ई० में राजा और रानी इंगलैंड गये और वहीं उनका देहान्त हो गया। उनके पश्चात् कमेहामेहा त्रितीय राजा बनाया गया। वह छोटा था इसलिये कलानिमोकू प्रधान मन्त्री का काम करता रहा।

वह काहुमान् के समय भी अपने पद पर काम करता रहा। १८२७ ई० में काहुमान् की मृत्यु हो गई और उसके पश्चात् कमेहामेहा की पुत्री किनाम् राजगद्दी पर सुशोभित हुई। १८३६ ई० में किनाम् की मृत्यु होगई उसके पश्चात् लुनालीलो की माता केकौलिओही राज-सिंहासन पर बैठी। केओपुआ लानी, कहामान्, किनाम और किकौलिओही आदि स्त्रियों ने अपने देश के लिये बड़ा भारी त्याग किया और अपनी समस्त भूमि १८८४ में अपनी जाति के लिये पाठशाला आदि बनाने के लिये सौंप दिया। हवाई में ईसाई धर्म प्रचार करने वालों का विरोध हवाई निवासियों ने उतना अधिक नहीं किया जितना कि वहाँ के गोरे चमड़े वाले सौदागरों ने किया। यह लोग मदिरा पीकर मस्त हो जाते थे और ईसाई पादरियों के काम में बाधक होते थे। वह लोग हवाई के नियमों का पालन नहीं करते थे। उन लोगों ने हवाई के धर्म प्रचारकों तथा पादरियों के घरों पर सशस्त्र धावा मारा और वहां की सरकार को उखाड़ कर फेंक देने का निश्चय किया। ब्रिटिश राजदूत ने दावा किया कि हवाई द्वीपसमूह पर ब्रिटिश सरकार का अधिकार है।

१८२५ ई० में लार्ड बायरन और १८२६ में कैप्टन जोन्स, १८२६ ई० में ह्वेल मछली के रोज़गार में और १८३५ में चीनी के रोज़गार में उन्नति हुई। १८२७ ई० में कैथलिक पुजारी भी हवाई पहुँचे। उनके आगमन पर झगड़ा आरम्भ हो गया। १८३१ ई० में कैथलिक पुजारी यह दोष लगा कर निकाल दिये गये कि वह मूर्ति पूजा पर जोर देते हैं। १८३६-३७ ई० में कैथलिक फिर वापिस आ गये।

विदेशियों के आ जाने से हवाई के निवासियों में नई जागृति उत्पन्न हो गई और वह अपने अधिकारों की मांग करने लगे। वह अधिक उन्नतिशील तथा उत्तरदायी सरकार की मांग करने लगे।

१७ जून १८३९ ई० को हवाई के राजा ने अपनी प्रजा के अधिकारों की घोषणा किया जिसे हवाई की मैगना-कार्टा कहते हैं। इसी समय कुछ और नियम बनाये गये और ८ अक्टूबर १८४० ई० को हवाई के प्रथम विधान की घोषणा की गई।

सन् १८३९, १८४२, १८४९ और १८५१ ई०

में फ्रांस के समुद्री सेना के अफसरों ने अन्यायपूर्ण मांगें हवाई सरकार के सामने रक्खीं और सशस्त्र अपनी मांगों की स्वीकृति करानी चाही। १८४३ ई० में एक अंग्रेज समुद्री सेना के अफसर ने राजसिंहासन पर अपना अधिकार जमाया और बाद में सिंहासन वापस किया गया। उसके बाद हवाई द्वीपसमूह और फ्रांस अमरीका तथा इङ्गलैण्ड के मध्य राजनैतिक तौर पर बातचीत हुई और संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने १८४२ ई० में और इङ्गलैण्ड तथा फ्रांस ने १८४३ ई० में हवाई की स्वाधीनता स्वीकार किया।

उसके बाद फ्रांस अफसरों के झगड़े के कारण हवाई द्वीप अमरीका की संरक्षता में कर दिये गये। १८५२ ई० के पश्चात् दुखदायी विदेशी निकाल बाहर किये गये। मोरमोन धर्म प्रचारक १८५० ई० में हवाई पहुँचे। आज उनके चर्च की संख्या सब से अधिक है और वह बड़ा काम कर रहे हैं।

कमेहामेहा चतुर्थ ने १८५४ ई० से १८६३ ई० तक और कमेहामेहा पञ्चम ने १८६३ से १८७२ ई० तक

शासन किया। इन दोनों राजाओं ने देखा कि उनके राज्य में अमरीकन प्रभुत्व अधिक हो रहा है इसलिये वह अंग्रेज़ों के अधिक सहायक रहे। कमेहामेहा चतुर्थ और उसकी रानी एमा क्वीन्स हास्पिटल तथा एपिस्कोपल चर्च की स्थापना के लिये प्रसिद्ध हैं। १८६३ ई० में अमरीकन बोर्ड उठ गई और उसने अपना काम हवाई के बोर्ड के हाथों सौंप दिया। इस प्रकार हवाई में हवाई ईसाइयों ने ही धर्म प्रचार का काम आरम्भ किया।

१८६४ ई० में कमेहामेहा पंचम ने हवाई में नये विधान की घोषणा किया। कमेहामेहा पञ्चम की मृत्यु १८७२ ई० में हुई। उससे कमेहामेहा राजघराने का अन्त हो गया।

१८७६ ई० में कालाकावा के शासन के समय में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के साथ हवाई द्वीपसमूह की संधि हुई जिसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। यह संधि दस वर्ष के लिये की गई थी। १८८७ ई० में अमरीका को पर्ल हार्बर में प्रवेश करने और उसे कोयला पानी का जहाजी स्टेशन बनाने का अधिकार प्राप्त हुआ।

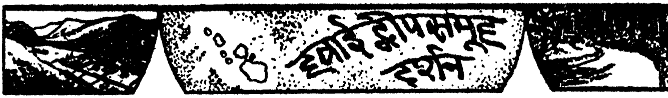


हवाई के राजा अपनी शक्ति को धीरे धीरे बढ़ाना चाहते थे और प्रजा के अधिकारों का अंत पुनः करना चाहते थे इसलिये उनके विरुद्ध हवाई के उत्साही पुरुषों ने शान्तिपूर्वक क्रान्ति किया। जिसके फलस्वरूप १८१७ ई० में वहाँ के राजा ने हवाई के लिये एक नये विधान की घोषणा किया जिसके द्वारा वहाँ की सरकार मन्त्री मण्डलों द्वारा चलनो आरम्भ हुई। १८८३ ई० में हवाई में बलवा हुआ उसके बाद १८९१ई० में राजा की मृत्यु हो गई और उसकी बहिन लिल्योकालानी राजगद्दी पर बैठी। वह एक अच्छी कवियित्री तथा संगीत शास्त्र में निपुण स्त्री थी। १७ जून १८९३ ई० को वह गद्दी से उतार दी गई और हवाई में प्रावीज़नल सरकार की स्थापना की गई। अमरीका के समर्थक लोग पहले ही से प्रयत्न कर रहे थे। हवाई द्वीपसमूह संयुक्त राष्ट्र सरकार में सम्मिलित कर दिया जाय। इसलिये संयुक्त राष्ट्र अमरीका के समर्थकों ने पुनः जोर लगाया कि हवाई द्वीपसमूह संयुक्त राष्ट्र सरकार में मिला लिये जावें।

४ जुलाई १८९४ ई० को हवाई में प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना हुई और सनफार्ड बी० डौले (एक अमरी-

कन धर्म प्रचारक का पुत्र) हवाई प्रजातन्त्र राज्य का सभापति बनाया गया। १८६५ ई० में पुनः बलवा हुआ। उसके बाद हवाई द्वीपसमूह १२ अगस्त १८६८ ई० को संयुक्त राष्ट्र अमरीका में मिला लिये गये। ३० अप्रैल १६०० ई० में संयुक्तराष्ट्र अमरीका की कांग्रेस ने हवाई द्वीपों के लिये एक विधान बनाया। १४ जून १६०० ई० से हवाई का शासन उसी विधान के अनुसार हो रहा है।





उद्यम तथा रोज़गार

यद्यपि हवाई द्वीपसमूह एक कृषक प्रदेश है फिर भी वहां पर जो वस्तुएँ पैदा होती हैं उनको प्रयोग करने योग्य बनाकर विदेश भेजा जाता है। पहले हवाई में चन्दन, ह्वेल मछली और पिट्रौल का रोजगार होता था परन्तु अब यह रोज़गार प्रायः बन्द से हो गये हैं। गन्ना और ईख की उपज हवाई में बहुत होती है। १६२२ ई० में हवाई में ६ लाख टन शक्कर की उपज हुई थी और १६२७ ई० में यह उपज बढ़ कर ८ लाख टन हो गई। इससे पता चलता है कि वहां ईख और गन्ने की उपज बढ़ रही है। शक्कर बनाने का काम हवाई के कारखानों में होता है और फिर बचा हुआ कच्चा सामान संयुक्त राष्ट्र अमरीका चला जाता है और वहाँ उससे शक्कर तयार की जाती है। चीनी के बाद हवाई का दूसरा बड़ा रोज़गार अनन्नास का है। अनन्नास की खेती ५० हज़ार एकड़ में होती है। चावल, क़हवा और मछली तयार करने का रोज़गार भी होता है और लाखों की संख्या में लोग इन रोज़गारों में लगे हुये हैं। हवाई में

लोहे का भी कारखाना है जहां दूसरे कारखानों के लिये कलें तयार होती हैं। मदिरा और स्पिरिट भी तयार की जाती है। जूते, कपड़े, संगीत के बाजे, कांक-रीट, पाइप, चूना, नाव आदि सामान तयार करने का उद्यम भी हवाई में होता है। इस रोजगार से बना हुआ अधिकांश सामान हवाई में ही खर्च हो जाता है। पशु पालने और उससे सामान तयार करके बाहर भेजने का रोजगार भी है।

कृषि तथा व्यापार

हवाई का मुख्य रोजगार खेती है। सबसे अधिक खेती गन्ने अथवा ईख की होती है। इसी कारण वहां चीनी खूब तयार होती है और विदेश को भेजी जाती है। ईख के बाद अनन्नास की कृषि का नम्बर है। लगभग ५ हजार एकड़ में अनन्नास की खेती होती है। रेशम तयार करने के लिये शहतूत के बाग लगाने का काम भी चलाया गया है। रुई, तम्बाकू, रबर, आलू, गेहूँ, चावल, कहवा आदि भिन्न-भिन्न खेती की वस्तुएँ पैदा की जाती हैं। जानवरों को वहां के निवासी पालते हैं और

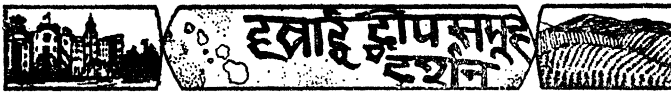


उनसे जो सामान मिलता है उसे बाहर भेजते हैं। मांस, अंडा और मछली विदेशों को भेजे जाते हैं। शक्कर तयार करके अमरीका भेजी जाती है। स्पिरिट और मदिरा आदि जो कुछ तयार होती है वह भी बाहर भेज दी जाती है। शक्कर बनाने का कच्चा सामान जो हवाई के कारखानों में तयार नहीं हो सकता वह बाहर भेज दिया जाता है। हवाई का अधिकांश व्यापार संयुक्तराष्ट्र अमरीका के साथ होता है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के साथ उसका लगभग २२ करोड़ रुपये का सालाना व्यापार होता है। शेष लगभग ७८ लाख का व्यापार दूसरे देशों के साथ होता है। चीनी, फल, नारियल, सुपाड़ी, अनन्नास, केला, चावल, शहद, चमड़ा, कहवा और मसाला आदि विदेशों को भेजा जाता है। दैनिक प्रयोग की वस्तुएँ तथा कारखाने का सामान संयुक्त राष्ट्र से, जूट के बोरे भारतवर्ष से और खाने की सामग्री जापान, चीन, न्यूज़ीलैंड तथा आस्ट्रेलिया से और खाद तथा खेती के सामान चिली और जर्मनी से हवाई द्वीपसमूहों को जाता है।

देश दर्शन

आने जाने के साधन

होनोलूलू हवाई द्वीपसमूह की राजधानी तथा एक बड़ा नगर और बन्दरगाह है। यहाँ बन्दरगाह पर बड़े बड़े पक्के घाट तथा गोदाम बनाये गये हैं। सूखे घाट भी हैं जहाँ जहाजों को बनाया जा सकता है। जहाजों को कोयला पानी लेने के लिये अच्छा प्रबन्ध है। तेल भरने के लिये कारखानों से जहाजों तक नल लगे हैं। यहाँ संसार के प्रत्येक राष्ट्र के जहाज आया करते हैं। हवाई द्वीप में कई एक हवाई स्टेशन हैं। ३६० मील रेलवे लाइन और हज़ारों मील कच्ची तथा पक्की सड़कें हैं। हवाई में ३५ हज़ार से अधिक मोटर लारियाँ तथा बसें हैं। बड़े द्वीपों में टेलीफोन लाइनें हैं। होनोलूलू में बिजली से चलने वाली रेलवे लाइनें हैं। प्रशान्त महासागर के आरपार समाचार सम्बन्ध के लिये बेतार के तार के स्टेशन तथा द्वीपों के बीच और जहाजों से सम्बन्ध रखने के लिये बेतार के तार के स्टेशन हैं।



जनसंख्या

जिस समय हवाई द्वीपसमूह का पता लगा उस समय वहाँ की जनसंख्या लगभग ३ लाख थी। उसके बाद शुद्ध हवाई लोगों की संख्या घटने लगी और दोगले लोगों की संख्या बढ़ी है। हवाई द्वीपसमूह की वर्तमान जनसंख्या लगभग ४ लाख है। १९२७ ई० में हवाई में हवाई लोगों की संख्या ५०९३१, काकेशियन-हवाई लोगों की १५२०८, एशियाटिक हवाई लोगों की ९४३७, अमरीका और उत्तर योरुप के लोगों की ३४७५०, पुर्तगालियों की २८४१७, स्पेनी लोगों की १७७४, पोर्टोरिकन की ६५७२, फिलोपिनों की ५२१२४, चीनी लोगों की २५१९८, जापानी लोगों की १,३२,२४२, कोरियन लोगों की ६२१५ और दूसरे लोगों की जनसंख्या ५५३ थी।

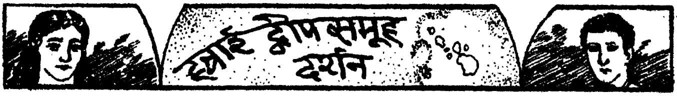
सब से अधिक जनसंख्या होनोलूलू की है। होनोलूलू नगर की जनसंख्या १०६६००, शेष होनोलूलू द्वीप के नगर और प्रान्त की ६४६५० है। हिलो नगर की जनसंख्या १२३९४ है। शेष हवाई द्वीप की ६६१६० है। मावी द्वीप की जनसंख्या ४७०६०, कवाय

की ३५६७ और कालाओ की ५८६ है। चीनी, जापानी और कोरिया के निवासियों की संख्या धीरे धीरे बढ़ती जा रही है।

हवाई द्वीपसमूह में लगभग ४५ प्रतिशत जापानी हैं। शेष ५५ प्रतिशत में चीनी, फिलीपिनो, हवाई, पुर्तगाली, अमरीकन तथा दूसरी जातियाँ हैं।

ओहू

यद्यपि हवाई द्वीपसमूह में हवाई सब से बड़ा द्वीप है तो भी सब से अधिक प्रसिद्ध द्वीप ओहू है। ओहू द्वीप में ही हवाई द्वीपसमूह की राजधानी होनालूलू तथा पर्ल हार्बर स्थित हैं। होनोलूलू नगर संसार का एक बड़ा ही सुन्दर नगर है। इस नगर के चारों ओर का दृश्य बड़ा रमणीक है। नगर के पीछे की ओर पर्वत है और नगर में तथा उसके पड़ोस में भांति भांति की सुन्दर वनस्पति पाई जाती है। यहां अनेक प्रकार के सुगन्धित पुष्प पाये जाते हैं। पुष्पों के सुन्दर बड़े हार बनते हैं। विदेशी यात्री जो वहाँ का भ्रमण करने जाते हैं वह उन हारों की स्मृति सदैव के लिये अपने साथ लेकर आते हैं।



यह द्वीप अपने पक्षियों के लिये भी बहुत प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि हवाई द्वीपसमूह में संसार के सभी देशों से अधिक पक्षी पाये जाते हैं। वहाँ की सरकार ने पक्षियों की रक्षा के लिये नियम बनाये हैं जिससे कोई पक्षियों का नाश न कर सके। एक बार एक ही ऋतु में जापानी लोगों ने वहाँ के पक्षियों के पंख प्राप्त करने हेतु ३ लाख पक्षियों का बध किया था।

हवाई द्वीप की अंतिम शासक लालियो कालानी थी। यह रानी एक बड़ी कवियित्री थी। वह बड़ी चतुर सुजान तथा बुद्धिमती थी। उसने बहुत सी कविताएँ तथा गाने लिखे हैं। उसी ने "अलोहा ओ" नामक पवित्र राष्ट्रीय संगीत अपने देश के लिये लिखा था। होनोलूलू बन्दरगाह पर जितने जहाज आते जाते हैं उन पर बन्दरगाह छोड़ते तथा प्रवेश करते समय यह संगीत गाया जाता है। यह संगीत महारानी ने लाइक लाइक नामक राजकुमारी के ऊपर लिखा था। यह राजकुमारी इतनी सुन्दर थी कि उसके नाम से संगीत ध्वनि निकलती थी और उसकी मुसकान से आनन्द छा जाता है।

देश दर्शन

खेल-तमाशे

हवाई द्वीप के बालक छोटी छोटी नावों को समुद्र की लहरों पर उतार कर खेलते हैं। यद्यपि यह खेल बड़ा ही खतरनाक होता है तो भी वह बड़ी सरलता से इसे खेलते हैं। यहां के बालक पर्वतों के ढालों पर (जहां घास जमी रहती है) फिसलने का खेल खेलते हैं। वे अपने पैरों में टी की पत्तियां बांध लेते हैं। इनके बांधने से फिसलने में सहायता मिलती है। वह ऊँचे पर्वतीय स्थानों से बड़ी तेजी के साथ नीचे मैदानों में फिसल कर आते हैं। नीचे आकर ऊपर जाना बड़ा कठिन होता है। ऊपर की चढ़ाई बेत के बने हुये मचानों द्वारा होती है। ऊपर चढ़ते हुये यदि नीचे की ओर देखा जाय तो बड़ा भय प्रतीत होता है।

हवाई बच्चे समुद्र तट पर सीप तथा घोंघे एकत्रित करने का खेल खेलते हैं। लगभग सभी बालक समुद्र तट पर सीप और घोंघे ढूँढ़ते हुये दिखाई पड़ते हैं। सीप तथा घोंघे, हरे, पीले, लाल, भूरे और धारी दार होते हैं। बच्चे नये प्रकार के सीपों की खोज में लगे रहते

हैं। हवाई में यह सीप तथा घोंघे पर्वतों पर भी पाये जाते हैं।

हवाई द्वीप में जंगली पशु तथा ज़हरीले जानवर नहीं हैं इसलिये बच्चों को बनों तथा पहाड़ों पर जाने में किसी प्रकार का भय नहीं रहता है। बनों में जंगली बकरों का शिकार किया जाता है। पहाड़ों पर हिरन का शिकार होता है।

जंगली पेरू पक्षी का शिकार रात में किया जाता है। इनके शिकार में बन्दूक का प्रयोग नहीं होता है एक लट्ठे में मशाल तयार की जाती है और लोग गाते हुये बन में चलते हैं। मशाल के प्रकाश से पशु अंधा हो जाता है और गाने की ध्वनि से वह मस्त होकर अपने स्थान से नहीं भागता है। उसकी गर्दन पर मशाल रगड़ दी जाती है जिससे वह जल जाता है। इसी प्रकार बहुत से लोग चिड़ियों का शिकार भी करते हैं।

समुद्र में तैरने का भी खेल हवाई में बहुत होता है। हमारे देश की भांति वहां समुद्र में तैराई होती है और अच्छे तैरने वालों को पुरस्कार दिया जाता है।

हवाई में अमरीकन खेलों का रिवाज भी खूब हो गया है। पाठशालों में फुटबाल, क्रीकेट, हाकी और टेनिस आदि खेल खेले जाते हैं।

समुद्र में मछली मारने का खेल भी बड़े मजेदार होता हैं। हवाई बालक अपने हाथों में भाले लेकर समुद्र में कूद पड़ते हैं। वह तैरते हुये भालों से मछलियों का शिकार करते हैं। जब वह देखते हैं कि पानी के अन्दर कोई मछली है तो वह डुबकी लगाकर उस पर पानी के भीतर भाले से चोट करते हैं। इस प्रकार के शिकार में बच्चों को बड़ा आनन्द आता है।

होनोलूलू

यह नगर ओहू द्वीप में स्थित है और हवाई द्वीप समूह की राजधानो है। होनोलूलू नगर के घर अमरीकन ढंग के बने हैं। घरों के चारों ओर वाटिकाएँ लगाई गई हैं। वृक्षों के शीघ्र ही बढ़ जाने से घर बड़े पुराने प्रतीत होते हैं। होनोलूलू में शुद्ध हवाई जाति के लोग बहुत कम हैं। वहां के अधिकांश निवासी हवाई के

पैदा हुये अमरीकन लोग हैं। नगर का प्रबन्ध तथा व्यापार आदि सब अमरीकन ढंग का है। दिन प्रति दिन हवाई द्वीपसमूहों की उन्नति अमरीकन ढंग पर होती जाती है। नगर में जापानी व्यापारी भी बहुत हैं जिनकी दूकानें नगर के बाहरी भाग तक फैली हुई हैं।

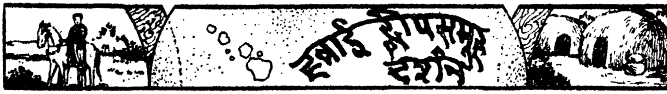
नगर के स्कूलों में प्रत्येक राष्ट्र तथा जाति के बालक तथा बालिकाएँ पढ़ने के लिये जाती हैं। वह सभी एक साथ पढ़ते लिखते और खेलते कूदते हैं। वहां के अमरीकन बच्चे अमरीकन ढंग से ही अपना जीवन बनाते हैं और प्रत्येक अमरीकन रीति-रिवाज का पालन करते हैं। होनोलूलू एक बड़ा बन्दरगाह भी है यहां हवाई तथा समुद्री जहाजों का अड्डा है। नगर की सुन्दरता देखने योग्य है। हानोलूलू नगर में प्रायः संसार के सभी भागों के लोग दिखाई पड़ते हैं। नगर की सड़कें बड़ी चौड़ी हैं। नगर से चारों ओर बिजली से चलने वाली रेलगाड़ी की सड़कें गई हैं। विदेशी लोगों के ठहरने के लिये नगर में बड़े बड़े होटल बने हैं। यहां पर सदैव अमरीकन सेना का अड्डा रहता है।

देश दर्शन

हवाई द्वीपसमूह की वर्ण-समस्या

हवाई द्वीपसमूह में ८ बड़े (हवाई, काहूलावे, माई, लानाई, मोलोकाई, ओआहू, काई, निहाऊ) द्वीप और असंख्य छोटे द्वीप शामिल हैं। इन्हीं में प्रशान्त महासागर के मिडवे और चलमायरा द्वीप भी शामिल हैं। यहां का क्षेत्रफल ६४३८ वर्गमील और जन संख्या ४,१२,००० है जो बम्बई शहर की जन-संख्या की एक तिहाई है। इस जन-संख्या में सबसे अधिक (१,५०,०००) जापानी हैं। चीनी, कोरिया वासी और दूसरे एशियावासियों की संख्या प्रायः ६०,००० है। अमरीकन जर्मन, पुर्तगाली आदि योरुपीय लोग भी ६०,००० हज़ार हैं। इस प्रकार इस द्वीप समूह के प्रधान निवासी सबसे कम हैं। इनकी जन-संख्या केवल ६१००० है। कुछ हज़ार दूसरे और लोग हैं।

अब से २० वर्ष पहले जापानी लोग बढ़ती हुई संख्या में यहां आ रहे थे। १६२४ में इमीग्रेशन (यहां आने वाले लोगों के सम्बन्ध में) कानून बना। तब से जापानी लोगों का यहां आना प्रायः बन्द हो गया।

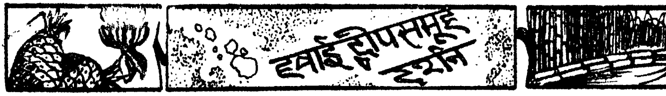


और उनकी संख्या धीरे धीरे घटने लगी। अमरीका का यहां अधिकार होने के कारण जो जापानी हवाई द्वीप में पैदा हुये हैं उनको अमरीकन नागरिक के अधिकार प्राप्त हो गये हैं। जो जापानी अमरीकन नागरिक हो जाते हैं वे जापानी नागरिक नहीं रह सकते फिर भी गोरे अमरीकन लोगों को शंका रहती है कि नये जापानी अमेरिका के देश-भक्त न रह सकेंगे।

जापानी लोगों ने अपनी भाषा जीवित रखने के लिये यहां जापानी भाषा के स्कूल खोल रक्खे हैं। जापानी भाषा के ये स्कूल यहां के पब्लिक स्कूलों का स्थान नहीं लेते हैं। वे केवल उनकी कमी की पूर्ति करते हैं। पब्लिक स्कूलों में अँग्रेज़ी पढ़ाई जाती थी। पब्लिक स्कूलों में छुट्टी होने के बाद जापानी बच्चे जापानी भाषा के स्कूलों में एक दो घंटे भाषा का अध्ययन करते हैं। पहले भाषा के इन स्कूलों में भाषा द्वारा जापानी कला, इतिहास आदि की शिक्षा दी जाती थी। हाल में जापानी भाषा को प्रधानता दी जाने लगी। विषय अमरीकन रहते थे। पहले जापानी भाषा के ये स्कूल जापानी लोगों की बड़ी सेवा करते थे। प्रथम आने वाले जापानी

केवल जापानी भाषा बोल सकते थे। वे चाहते थे कि उनके बच्चे भी जापानी भाषा का ज्ञान प्राप्त कर लें और जापान से सम्बन्ध रक्खें लेकिन दूसरी पीढ़ी के जापानी पब्लिक स्कूलों में अँग्रेज़ी का अधिक अध्ययन करते थे। तीसरी पीढ़ी के जापानी तो प्रायः अमरीकन होने लगे। जो जापानी यात्री जापान से यहां आते वे इनकी सभा में अँग्रेज़ी भाषा में व्याख्यान देते थे। बहुत से जापानी रहन-सहन में भी अमरीकन बन गये। फिर भी कुछ लोग जापान से सहानुभूति रखते थे जैसा कि वर्तमान जापानी आक्रमण से स्पष्ट हो गया है।





पर्ल बन्दरगाह

पर्ल हार्बर होनोलूलू के समीप उत्तर-पश्चिम की ओर संसार का एक बहुत बड़ा बन्दरगाह है। प्रवाल चट्टानों के मध्य होकर एक सँकरी खाड़ी भीतर की ओर जाती है जहाँ पर ६ वर्गमील की एक बड़ी सुरक्षित खाड़ी है। इसी स्थान पर संयुक्तराष्ट्र अमरीका का अधिकांश जहाजी बेड़ा रहता है। पर्ल बन्दरगाह की किलेबन्दी भली भांति की गई है। खाड़ी में इतना स्थान है कि वहाँ समस्त अमरीकन जहाजी बेड़ा और उसके अतिरिक्त दो एक और दूसरे जहाजी बेड़े सरलता पूर्वक ठहर सकते हैं।

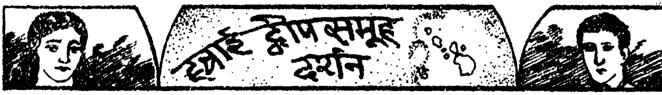
पर्ल बन्दरगाह तयार करने में बहुत अधिक धन व्यय किया गया है। ३० जून सन् १९३० ई० तक पर्ल बन्दरगाह पर कुल लगभग ५० करोड़ रुपया व्यय किया गया था। अमरीका की गत कांग्रेस ने उसके लिये १ करोड़ ६० लाख रुपया और मंजूर किया है। वहाँ पर बड़े लड़ाका जहाजों और विमान ढोने वाले जहाजों की मरम्मत के लिये भी घाट बनाये गये हैं।

१९३५ ई० में संयुक्तराष्ट्र अमरीका का समस्त जहाजी बेड़ा वहाँ ठहराया गया था।

समुद्री घाटों पर जहाजों को कोयला पानी लेने, सशस्त्र होने तथा मरम्मत किये जाने के लिये अलग अलग स्थान बने हैं।

एक हज़ार फुट से बड़े बोम वाले लड़ाका जहाजों तथा बड़े विमान ढोने वाले जहाजों के लिये सूखे तैरते घाट बनाने के लिये अमरीका की सरकार ने फिर ४ करोड़ रुपया मंजूर किया है।

पर्ल हार्बर की रक्षा के लिये संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने ओहू द्वीप में कई एक सैनिक अड्डे बना रक्खे हैं। वहाँ पर १६ इंच, १४ इंच और १२ इंच की तोपों की बैटरियाँ लगी हुई हैं। वहाँ पर कई मील लम्बी सैनिक सड़क बनाई गई है। बड़े बड़े ऊँचे कंक्रीट तथा फौलाद के स्तम्भ बनाये गये हैं जहाँ से आने वाले दूर के विमानों तथा हवाई जहाजों का पता लगाया जा सकता है। बड़े बड़े सर्च लाइट तथा शब्द बेधक स्तम्भ बने हैं जो शीघ्र ही शत्रु के विमानों तथा जहाजों का पता लगा लेते हैं। एक ज्वालामुखी पर्वत के क्रेटर (मुख) को



समतल करके उसे फौजी अड्डा बनाया गया है और वहां पर ७ करोड़ रुपये के अस्त्र तथा एक तगड़ी सेना २० हज़ार सैनिकों की रक्खी गई है। वहाँ पर हिक हाम फील्ड नामक हवाई अड्डा बनाया गया है। इस अड्डे में २३०० एकड़ ज़मीन है और लगभग ४ करोड़ रुपया व्यय हुआ है। यह संयुक्तराष्ट्र अमरीका के सभी हवाई अड्डों से बड़ा है।

सब से बड़ा सैनिक मैदान स्चीफील्ड बैरक्स का है। यह स्थान होनोलूलू से २० मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। ओहू की जल तथा स्थल सेना का ध्यान रखते हुए कहा जा सकता है कि वहाँ किसी भी शत्रु का प्रवेश असम्भव है। कहा जाता है कि पर्ल का बन्दरगाह संसार में सब से सुरक्षित जहाजी अड्डा है।

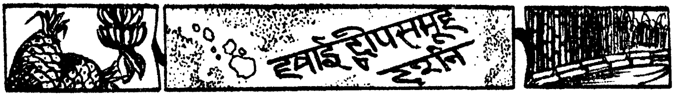
एडमिरल लीही के कथनानुसार प्रशान्त महासागर में जब तक संयुक्तराष्ट्र अमरीका का जहाजी बेड़ा बाकी है तब तक हवाई द्वीपसमूह पर कोई शत्रु अधिकार नहीं जमा सकता है।

बर्तमान हवाई द्वीपसमूह

७ दिसम्बर सन् १९४१ ई० को जापान ने एकाएक पर्ल हार्बर पर धावा मार दिया। आक्रमण बम वर्षक विमानों द्वारा हुआ था। अमरीकन सेना पर्ल बन्दरगाह की रक्षा न कर सकी। पर्ल बन्दरगाह और होनोलूलू दोनों स्थान की सेनाओं को भीषण हानि हुई। अमरीकन जल सेना के जो सैनिक जहाज इन स्थानों पर थे अधिकांश नष्ट हो गये परन्तु फिर भी जापानी सेना वहां उतर नहीं सकी।

हवाई द्वीप समूह की रक्षा के लिये अमरीका बड़ा प्रयत्न कर रहा है। ओहियो द्वीप हवाई द्वीपसमूह का केन्द्र माना जाता है बड़ी सावधानी के साथ दृढ़ बनाया गया है। प्रत्येक भांति के रक्षा करने वाले यंत्र वहां लगाये गये हैं और संसार में रक्षा के हेतु जो कुछ भी प्रयत्न किया जा सकता है वहां सभी प्रयत्न बड़ी दृढ़ता के साथ किये जा रहे हैं।

६०० वर्गमील में होनोलूलू, पर्ल हार्बर का समुद्री तथा हवाई जहाजी अड्डा, सेना का मैदान, कारखाने



आदि सभी स्थित हैं। इस मैदान के उत्तर और दक्षिण पश्चिम ३ हज़ार से चार हज़ार फुट तक की पर्वत श्रेणियां हैं। लड़ाका विध्वंस कारक और क्रूशियर जहाज डुबुकनी नावें प्रत्येक भांति के सैनिक विमान, प्रत्येक भांति की तोपें सभी वहां बर्तमान हैं। तट पर विमान संहारिणी तोपें तथा तटीय तोपें लगी हैं।

हवाई द्वीपों में केवल दो बातों से खतरा था एक तो वहाँ भोजन सामग्री की कमी थी। दूसरे वहां पञ्चम सेना का भय था। हवाई में ईख और अनन्नास की उपज अच्छी होती है। अमरीका ने दोनों प्रश्नों की ओर भली भांति ध्यान दिया है। अब हवाई में ६ माह के घेरे के लिये भोजन सामग्री एकत्रित कर दी गई है। समस्त द्वीप में भोजन सामग्री उत्पन्न करने के लिये सैनिक कानून लागू कर दिया गया है।

हवाई देश में जापानी जाति के एक लाख ५० हज़ार व्यक्ति हैं जिन पर पर्ल हार्बर और होनोलूलू पर आक्रमण के समय पञ्चम सेना का काम करने के लिये संदेह किया गया है। पश्चिमी तट से सभी जापानी लोग

हटा दिये गये हैं। हवाई द्वीप से ही जापान के विरुद्ध युद्ध लड़ा जा सकता है। इसीलिये उसकी तयारी अमरीका बड़े ज़ोरों से कर रहा है।